हरिभूमि
समाचार ही नहीं, विचार भी

प्रकृति के चितेरे सुमित्रानंदन पंत का मनाया जन्मदिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में हिंदी जगत के महान छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मानविकी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. बीएम यादव ने कहा कि हिंदी जगत के महान साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव और प्रकृति को एक दूसरे का पूरक बताया है। प्रकृति के अभाव में मानव जीवन की कल्पना भी संभव नहीं है। इसलिए हमें उनकी कविताओं से प्रकृति संरक्षण का भी संदेश लेना चाहिए क्योंकि प्रकृति के सुरक्षित होने पर ही पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. जेके शर्मा ने सुमित्रानंदन पंत के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्यकार किसी भी भाषा का क्यों न हो वह किसी न किसी रूप में प्रकृति से अवश्य ही जुड़ा रहता है उसकी रचनाओं में प्रकृति प्रेम की छटा अवश्य ही परिलक्षित होती है। संस्कृत विभाग अध्यक्ष डॉ.सुभाष चंद्र गुप्ता ने कहा कि सुमित्रानंदन पंत बेशक हिंदी जगत के कवि थे, लेकिन उनका जुड़ाव संस्कृत भाषा से भी था। डॉ. अल्केश ने कविता के माध्यम से प्रकृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। हिंदी विभाग के शोधार्थी रितु, वीरेंद्र, रितु रानी, भावना, रीना मलिक आदि ने पंत का प्रकृति चित्रण और उसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुमन राठी ने किया एवं समापन डॉ. प्रवेश कुमारी ने किया। इस कार्यक्रम में डॉ. सुधीर मालिक, डॉ. नरेंद्र चिमनी, डॉ. मधुअहलावत, डॉ. हरिओम, डॉ.सुशील, डॉ. पुष्पा, डॉ. सत्येंद्र, डॉ. अतुल, डॉ. जितेंद्र, डॉ. पवन, डॉ. सोनिका, डॉ.सीमा शर्मा, डॉ. पटेल सिंह, डॉ. रेखा आदि मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर

बीएमयू में प्रकृति चितेरे कवि सुमित्रानंदन पंत के जन्मदिवस पर विचार गोष्ठी

पंत की रचनाओं में मानव व प्रकृति के आपसी जुड़ाव का विस्तारः डॉ. यादव

पंत ने कविताओं से यह भी संदेश दिया कि प्रकृति का संरक्षण करें

भास्कर न्यूज | रोहतक

बीएमयू में प्रकृति चितेरे कवि सुमित्रानंदन पंत के जन्मदिवस पर विचार गोष्ठी में मौजूद शिक्षक व विद्यार्थी।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में शुक्रवार को विचार संगोष्ठी हुई। इसमें मानविकी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. बीएम यादव ने कहा कि हिंदी जगत के साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं से मानव और प्रकृति को एक दूसरे का पूरक बताया है। प्रकृति के अभाव में मानव जीवन की कल्पना भी संभव नहीं है। इसलिए हमें उनकी कविताओं से प्रकृति संरक्षण का भी संदेश लेना चाहिए। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. जेके शर्मा ने सुमित्रानंदन पंत जी जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि साहित्यकार किसी भी भाषा का क्यों न हो, वह किसी न किसी रूप में प्रकृति से अवश्य ही जुड़ा रहता है उसकी रचनाओं में प्रकृति प्रेम की छटा परिलक्षित होती है। संस्कृत विभाग अध्यक्ष डॉ. सुभाष चंद्र गुप्ता ने कहा कि सुमित्रानंदन पंत बेशक हिंदी जगत के कवि रहे, लेकिन उनका जुड़ाव संस्कृत भाषा से भी था। इसी कारण उन्होंने महाकवि कालिदास की रचनाओं के प्रकृति के सजीव चित्रण से प्रभावित होकर प्रकृति प्रेम पर अपनी लेखनी चलाई।

कविता से प्रकृति का सजीव चित्रण किया प्रस्तुत

डॉ. अल्केश ने कविता के माध्यम से प्रकृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। हिंदी विभाग के शोधार्थी रितु, वीरेंद्र, रितुरानी, भावना, रीना मलिक आदि ने पंत का प्रकृति चित्रण और उसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त किए। विचार गोष्ठी का संचालन डॉ. सुमन राठी एवं समापन डॉ. प्रवेश कुमारी ने किया। संगोष्ठी में डॉ. सुधीर मालिक, डॉ. नरेंद्र चिमनी, डॉ. मधु अहलावत, डॉ. हरिओम, डॉ.सुशील, डॉ. पुष्पा, डॉ. सत्येंद्र, डॉ. अतुल, डॉ. जितेंद्र, डॉ. पवन, डॉ. सोनिका, डॉ.सीमा शर्मा, डॉ. पटेल सिंह, डॉ. रेखा सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अमर उजाला

बीएमयू में मनाई सुमित्रानंदन पंत की जयंत

बीएमयू में सुमित्रानंदन पंत की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में शामिल लोग। विज्ञप्ति

माई सिटी रिपोर्टर

रोहतक। बीएमयू के हिंदी विभाग में हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत के जन्मदिन पर विचार संगोष्ठी आयोजित की गई। इस मौके पर मानविकी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. बीएम यादव ने कहा कि सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव व प्रकृति को एक दूसरे का पूरक बताया। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी संभव नहीं है।

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. जेके शर्मा सुमित्रानंदन पंत के जीवन पर प्रका डाला। डॉ. अल्केश ने कविता के माध्य से प्रकृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया हिंदी विभाग के शोधार्थी रितु, वीरेंद्र भावना, रीना आदि ने पंत के प्रकृति चित्र व वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर विचा व्यक्त किए। इस मौके पर डॉ. सुधीर, डॉ नरेंद्र, डॉ. मधु, डॉ. हरिओम, डॉ.सुशील डॉ. पुष्पा, डॉ.सीमा शर्मा, डॉ. पटेल, डॉ रेखा सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।